शोध मंथन Vol. XI No.IV Oct.-Dec. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

महात्मा गाँधी एवं डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के दार्शनिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 अदिती गोस्वामी
असिस्टेंट प्रोफेसर (गेस्ट फैकल्टी),
शिक्षाशास्त्र विभाग,
महिला सेवा सदन डिग्री कालेज,
प्रयागराज
ईमेलः aditigoswami1717@gmail.com

श्रीमती आराधना कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
महिला सेवा सदन डिग्री कालेज,
प्रयागराज
ईमेलः dradhana14@gmail.com

सारांश

''गाँधी के दर्शन में जो स्थान सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के 'त्रिक' का है, अम्बेडकर के दर्शन में वही स्थान स्वतंत्रता, समता और बन्धुभाव की त्रिपुरी का है।''

महात्मा गाँधी और डॉ0 भीमराव अम्बेडकर भिन्न–भिन्न मतों एवं लम्बे समयान्तराल के हैं तथा दोनों के स्वभाव, आस्थाएं, विचार, संवाद–शैली तथा कार्य प्रणाली भी भिन्न–भिन्न है। जहाँ गाँधी मानवतावादी दार्शनिक थे उनका पूरा दर्शन सत्य अहिंसा और सत्याग्रह पर आधारित वही डॉ0 भीमराव अम्बेडकर व्यवहारवादी दार्शनिक जिनका दर्शन स्वतंत्रता, समता तथा बन्धुत्व को महत्त्व देता है किन्तु दोनों ही महापुरुष परतंत्रता के साथ–साथ सभ्यता के संक्रमण काल के थे जहाँ देश को स्वतंत्र कराने के साथ ही समाज में फैल रही भौतिक सभ्यता को भारत के पुरातन शाष्वत् ज्ञान द्वारा स्थापित करना एवं दलित बहुजनवाद के पुनरुत्थान हेतु आधुनिकतावाद को अंगीकृत करना जिससे समाज में व्याप्त बिखराव, अशिक्षा तथा चरमराती अर्थव्यवस्था को सम्भालते हुये लक्ष्य तक पहुँचना था।

प्रस्तावना

महात्मा गाँधी का दर्शन

''मनुष्य के लिए न तो अधिक आध्यात्मिक होना और न ही अति भौतिक होना वरन् दोनों का संतुलन ही मानव जीवन की सफलता है।'' गाँधी जी कर्मयोगी थे और उनके दर्शन का केन्द्र बिन्दु मानव है। जिसके समग्र विकास के लिए उन्होंने जीवन पर्यन्त प्रयास किया। गाँधी का सम्पूर्ण दर्शन सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के 'त्रिक' पर आधारित है। जिसका पाठ पढ़ाकर उन्होंने मनुष्य का आचरण बदलने का प्रयास किया। गाँधी जी ने समस्याओं का समाधान करने के लिए तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार चिन्तन किया।

डॉ0 अम्बेडकर का दर्शन

''बुद्धि का विकास मानव अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।'' डॉ0 अम्बेडकर न

केवल एक स्वप्नदर्शी राजनीतिक नेता और समाज सुधारक थे वरन् एक विद्वान और विचारक भी थे। जिन्होंने विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक मामलों पर बड़े पैमाने पर लिखा है। उनका चिन्तन निष्पक्षता और स्वतंत्रता के लक्ष्यों में गहरे विश्वास पर आधारित था। डॉ0 अम्बेडकर ने दलित वर्ग के जीवन में आमूल–चूल परिवर्तन के लिए बहुआयामी प्रयास किये।

महात्मा गाँधी और डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के विचारों की तुलना

भारत सदियों से अपनी आध्यात्मिक विचार धारा, सहिष्णुता, जीवटता, ज्ञान एवं मूल्यों के कारण जगत् गुरु रहा है। समय–समय पर इसमें उतार–चढ़ाव होता रहा है किन्तु भारत ने अपने आध्यात्मिक एवं दार्शनिक विचारों द्वारा विश्व को निरन्तर आलोकित किया। महात्मा गाँधी ने जहाँ भारत के पुरातन अहिंसा और सत्याग्रह द्वारा अनूठे रूप से विरोध प्रदर्शन का मार्ग अपनाया वहीं डॉ0 अम्बेडकर ने 'भारत का संविधान जो अपनी विशिष्टता के कारण विख्यात है। दोनों ने अलग–अलग रूपों से भारत की गरिमा को बनाये रखा। गाँधी और अम्बेडकर के विचारों में भिन्नता समयान्तराल एवं परिस्थिति के कारण है। कुछ दार्शनिक बिन्दुओं पर दोनों विचारकों के विचार इस प्रकार है–

शिक्षा

गाँधी के अनुसार–'शिक्षा की मेरी योजना में हाथ अक्षर लिखना–सीखना के पहले औज़ार चलाना सीखेगें'। बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य दस्तकारी के माध्यम से बालकों का शारीरिक बौद्धिक और नैतिक विकास करना जिससे बालक शिक्षा के साथ–साथ कौशल शिक्षा भी प्राप्त करे तथा श्रम की महत्ता को समझे। गाँधी जी के अनुसार 'मैं भारत के लिए निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के सिद्धान्त को दृढ़तापूर्वक मानता हूँ'। गाँधी जी अक्षर ज्ञान के साथ–साथ बालक को जीविकोपार्जन हेतु तैयार करने पर बल देते इस नयी शिक्षा व्यवस्था को 'नयी तालीम' 'बुनियादी शिक्षा' तथा 'कौशल शिक्षा' कहा। 'मनुष्य न तो कोरी बुद्धि है न स्थूल षरीर है और न केवल ह्रदय या आत्मा ही है। सम्पूर्ण मनुष्य के निर्माण के लिए तीनों का उचित और एक रस मेल होना आवश्यक है और यही शिक्षा की सच्ची व्यवस्था है।'

वहीं डॉ0 अम्बेडकर के अनुसार 'शिक्षा जनहितकारी होनी चाहिये शिक्षा से प्राप्त योग्यता का उपयोग वंचित समाज के कल्याण के लिये किया जाना चाहिये। इस प्रकार शिक्षा बहुजन हिताय बहुजन सुखाय होना चाहिए न कि स्वहिताय स्वसुखाय।' डॉ0 अम्बेडकर का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा और ज्ञान से स्थिति में सुधार होगा। 'शिक्षा मनुष्य को प्रबुद्ध बनाती है। उसे उसके आत्म सम्मान से परिचित करवाती है और एक बेहतर आर्थिक जीवन देती है। 'शिक्षित बनो, संगठित रहो और उत्तेजित बनो।'

धर्म

गाँधी के अनुसार 'धर्म से मेरा अभिप्राय औपचारिक या रूढ़िगत धर्म से नही परन्तु उस धर्म से है जो सब धर्मों की बुनियाद है और जो हमें अपने सृजनहार से साक्षात्कार कराता है।' गाँधी जी का धर्म मूलतः मानवतावादी है तथा वे सभी धर्मों की समानता में विश्वास करते थे। उन्होंने धर्म को जीवन और समाज का आधारभूत तत्व माना जिसके निकल जाने से व्यक्ति और

समाज दोनों निष्प्राण हो जाते हैं। गाँधी जी व्यक्ति के दैहिक, मानसिक और आचरणात्मक पक्षों को धर्म से संयुक्त करते हैं।

वहीं डॉ0 अम्बेडकर के अनुसार 'धर्म मनुष्य के लिए है न कि मनुष्य धर्म के लिए।' डॉ0 अम्बेडकर धार्मिक नेता नहीं थे वे दलितों के लिए समर्पित थे जिनका लक्ष्य दलितोद्धार था। उनके जीवन में आस्था ने सदा लुका–छिपी का खेल–खेला हिन्दू धर्म के प्रति विरोध भावना अन्तिम समय तक बना रहा 'जो धर्म तुम्हें पाने के लिए पानी नही देता वह धर्म कहलाने योग्य नहीं होता जो धर्म तुम्हारे ज्ञान और शिक्षा के अधिकार को छीन लेता है जो धर्म तुम्हारे भौतिक उत्कर्ष में बाधा पहुंचाये वह धर्म कहलाने लायक नहीं है।' आपने धर्म को सिद्धान्त के विषय के रूप तो स्वीकार किया लेकिन वे नियमों बन्धनों से मुक्त रहकर धर्म मानते थे।

वर्ण व्यवस्था

गाँधी के 'वर्ण व्यवस्था में समाज की चौमुखी रचना ही मुझे तो असली कुदरती और जरूरी चीज़ दिखती है। बेशुमार जातियों और उपजातियों से कभी–कभी कुछ आसानी हुई होगी लेकिन इसमें शक नही कि ज्यादातर तो जातियों से अड़चन ही पैदा होती है। ऐसी उपजातियां जितनी एक हो जाये उतना ही उसमें समाज का भला है।' गाँधी जी प्राचीन वर्ण व्यवस्था से सहमत नहीं थे परन्तु आधुनिक प्रथा की तीव्र आलोचना करते थे और ऊँच–नीच के भेद को गलत मानते थे। जाति का धर्म से कोई सम्बन्ध नही है तथा यह राष्ट्रीयता और आध्यामिकता के विकास में बाधा है।

डॉ0 अम्बेडकर वर्ण व्यवस्था के खिलाफ थे। उनके अनुसार वर्ण व्यवस्था ने समाज, हिन्दू समाज को निष्क्रिय बना दिया। जिस कारण समाज ने ऊपर की ओर गतिशीलता खो दी तथा अपने दायरे में बाहर के लोगों को जगह देने में असमर्थ है।' वर्ण (जाति) व्यवस्था समाज के निचले स्तर के प्रति अन्याय को स्थायी रूप से बनाए रखती है उन्हें शिक्षा, समान अवसर, आजीविका और मानव गरिमा से वंचित कर दिया जाता है। इस प्रकार डॉ0 अम्बेडकर दलित समस्याओं को सीधे वर्ण व्यवस्था से जोड़कर देखते थे।

स्त्री शिक्षा

गाँधी जी के अनुसार–''मैं स्त्रियों की समुचित शिक्षा का हिमायती हूँ लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि स्त्री दुनिया की प्रगति में अपना योग पुरुष की नकल करके या उसकी प्रतिस्पर्धा करके नहीं दे सकती।'' गाँधी जी स्त्रियों को अबला कहना उनका अपमान मानते थे। वे स्त्रियों की शिक्षा के प्रबल समर्थक थे क्योंकि स्त्रियाँ किसी भी देश की आधी जनता है और यदि उन्हें निष्प्राण कर दिया गया तो देश स्वतः निष्प्राण हो जायेगा।

डॉ0 अम्बेडकर के अनुसार 'शिक्षा जितनी जरूरी पुरुषों के लिए है उतनी स्त्रियों के लिए भी आवश्यक यदि तुम पढ़ना–लिखना जान जाओं तो बहुत उन्नति होगी जैसी तुम होगी वैसे ही तुम्हारे बच्चे बनेंगे। अच्छे कार्यों की ओर अपना जीवन मोड़ दो तुम्हारे बच्चे इस संसार में चमकते हुये हो।' उन्होंने स्त्रियों का मनोबल ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाने तथा उनके साथ हो रहे

अत्याचार के विरोधी थे। हिन्दू कोड बिल पास कराकर समस्त नारी जाति का कल्याण किया किन्तु वे आदर्श मूल्यों की तिलांजलि देकर नारी स्वतंत्रता के पक्ष में नही है।

अस्पृश्यता

गाँधी के अनुसार– ''अस्पृश्यता की घृणित भावना हम लोगों में तब आयी होगी, जब हम अपने पतन को चरम सीमा पर रहे होंगे और तब से यह भयंकर अभिशाप हमारे साथ हैं।'' गाँधी जी अस्पृश्यता को ऐसा कलंक मानते थे जो मानवता के चेहरे पर बदनुमा दाग है। ''इस बात से कभी किसी ने इनकार नहीं किया कि अस्पृश्यता एक पुरानी प्रथा है लेकिन यदि वह एक अनिष्ट वस्तु है तो उसकी प्राचीनता के आधार पर बचाव नहीं किया जा सकता।' अस्पृश्यता के विरूद्ध उन्होनें आन्दोलन किये उनका विश्वास था कि यदि हिन्दू समाज से अस्पृश्यता की भावना दूर हो जाये तो वह विष्व का मार्ग दर्शन कर सकता है। गाँधी जी अछूतोद्धार के प्रेणता थे।

डॉ0 अम्बेडकर के अनुसार–''अस्पृश्यों का उद्धार केवल अस्पृश्यों के बल पर नहीं होगा अपितु पूरे समाज को साथ लेकर आगे बढ़ना होगा।'' डॉ0 अम्बेडकर जाति–पात को तोड़ने को सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे। इस लक्ष्य को पूरा करने में उनको अंग्रेज सरकार से सहयोग लेने में कोई हिचक नहीं थी। डॉ0 अम्बेडकर ने उन लोगों में आत्माभिमान जगाया जिन्हें हिन्दू समाज व्यवस्था ने सदियों से आत्महीन बना दिया था।

साम्प्रदायिकता

गाँधी के अनुसार–''मुझे इस बात में रंचमात्र भी संदेह नहीं है कि साम्प्रदायिक मतभेदों का कुहासा आज़ादी के सूर्य का उदय होते ही दूर हो जायेगा।'' गाँधी जी हिन्दू–मुस्लिम, सिख, ईसाई एवं पासी सभी सम्प्रदायों को एकता के सूत्र में बाँधना चाहते थे। गाँधी जी ने अन्तिम क्षण तक भारत विभाजन का प्रबल विरोध किया और साम्प्रदायिक एकता स्थापित करने के लिए आत्मोतसर्ग भी कर दिया।''

डॉ0 अम्बेडकर के अनुसार–''अतीत गौरव और पश्चाताप का सहभागी होता है। भविष्य में समान आदर्शों का ध्यान रखना, साथ–साथ सुख–दुःख की अनुभूति करना सामान्य परम्पराओं से अधिक मूल्यावान है। मुसलमान समान रूप से गर्व कर सके या सुख–दुख के सहभागी बन सके। यह एक अहम है।'' अम्बेडकर जी साम्प्रदायिकता को सम्पन्न विरासत मानते जो त्याग और लगन का परिणाम है यह दीर्घकाल का परिणाम है जो सामाजिक पूँजी और राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष

महात्मा गाँधी और डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के विचारों में भिन्नता समयान्तराल एवं परिस्थिति के कारण है किन्तु दोनों ही महापुरुषों ने विभिन्न विषयों पर अपने–अपने काल परिस्थिति के अनुसार विचार व्यक्त किये। दोनों ही विचारकों के विचार के अध्ययन के उपरान्त यह परिणाम प्राप्त होता है–

- गाँधी धार्मिक होते हुये भी धार्मिक रूढिवादियों और धर्मान्धता के समर्थक नहीं थे उनका दृष्टिकोण लौकिक था वही डॉ0 अम्बेडकर का संघर्ष उनकी जाति विद्रोह थी और गम्भीर संविश्लेषणात्मक मौलिक चिंतन उनकी प्राण सत्ता का आधार था।
- गाँधी जी ने मनुष्य को अपने कार्यों द्वारा कठिन से कठिन कार्यों को सरल करने पर बल दिया जबकि डॉ0 अम्बेडकर का कर्मवाद में कोई विश्वास नहीं था उनका चिन्तन मानव और मानवेतर तक सीमित था।
- गाँधी जी आस्तिक थे और प्रत्येक व्यक्ति को आस्तिक बनाकर उसका विकास करना चाहते थे जबकि डॉ0 अम्बेडकर नास्तिक रहे उनमें संतता थी किन्तु वे अड़ियाल अध्येता थे।
- गाँधी जी के विचारों का सार साध्य एवं साधन की शुद्धता जबकि अम्बेडकर जी के विचारों का सार मनुष्य के हृदय बुद्धि और सिद्धान्त थे।
- गाँधी जी सुधारवादी थे किन्तु परिवर्तनवादी नही वह स्थिति में नही दशा में सुधार करना चाहते थे जबकि अम्बेडकर जी दशा में सुधार करने के साथ परिवर्तन को भी स्वीकार करते थे।

दोनों ही महापुरुषों ने वर्तमान समाज में व्याप्त छुआ–छूत, रूढ़िवादिता, सामाजिकता तथा अन्य विकृतियां समाप्त हो जाये इसके लिए आजीवन प्रयास किया।

संदर्भ ग्रन्थ

1. गाँधी जी, (फरवरी 2011) नवजीवन ट्रस्ट अहमदाबाद ISBN-81-7229-037-3 'मेरे सपनों का भारत', पृं0 **261–263**.
2. उपरोक्त, पृं0 **265–268**
3. उपरोक्त, पृं0 **257–250**
4. महात्मा गाँधी, सम्पादक–सिद्धराज ढड्ढा (अक्टूबर 2010) सर्व सेवा संघ राजघाट, वाराणसी, *'मेरे सपनों का भारत (संक्षिप्त)*, पृं0 **143–146**
5. उपरोक्त, पृं0 **14–149**
6. उपरोक्त, पृं0 **150–155**
7. मिश्रा अनुराधा, 2006 कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड, *'सामाजिक न्याय के संदर्भ में महात्मा गाँधी एवं डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन'।*
8. शिप्रा (जुलाई / 2017) मगध विश्वविद्यालय, बोध गया बिहार, *'गाँधी और अम्बेडकर के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन'।*
9. गंगवार नितिन कुमार, जनवरी–जून 2012, राधाकमल मुखर्जी चिन्तन परम्परा, *'दलितोत्थान में गाँधी व डॉ0 अम्बेडकर के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन'*, पृं0 **97–99**